चित्र सौजन्य : डॉ. नाथूलाल वर्मा

ऋतुओं के राजा वसंत का मौसम आता है, हर ओर छाता है और गुनगुनाते हुए धरती को नए रंग में रंग देता है। प्रकृति का यह भाव हमें समझाता है कि खिले रंग और खुशिया हमेशा नहीं रहते, पर जब तक हैं उन्हें जी भरकर जीया जाए। जैसे वसंत के बाद मौसम को बदलना ही होता है। फूल मुरझाते भी हैं और पत्ते भी शाख से गिरते हैं। लेकिन जब तक वसंत का मौसम रहता है कुदरत हर पल को मुस्कुराते हुए जीती है। ठीक इसी तरह पतझड़ के बाद आने वाला वसंत यह भी बताता है कि जीवन की परिस्थितियां स्वयं सृजन की राह सुझाती हैं। हमें समझना होगा जीवन गतिशील है। ऋतु चक्र की तरह सुख-दुःख के मौसम आते-जाते रहेंगे। परिवर्तन और उतार-चढ़ाव का यह सच जीवन से गहराई से जुड़ा है। जिस तरह नव-सौंदर्य में खिली प्रकृति इन बदलावों को सार्थक ढंग से स्वीकार करती है, हमें भी सीखना होगा। इसीलिए हम छोटे से छोटे भाव का भी उत्सव मनाना सीखें। वर्तमान में जीना सीखें। हर परिवर्तन के प्रति सोच में स्वीकार्यता लाएं। यह स्वीकार्यता जीवन की गतिशील प्रवृत्ति को समझने और बेहतर ढंग से जीने में सहायक होगी।

खिल-खिली रुत के सुंदर भावों से मार्गदर्शन लिया जाय तो जिसका परिणाम यह होता है कि इन्सान अपने मन का मौसम बदलना सीखता है। यूं भी वसंत के मौसम में कुदरत का सीधा सा सन्देश यही होता है कि अपने मन का मौसम बदलना सीखिए। आनंद है तो आपके भीतर ही है। आत्मीय आनन्द और उत्सवीय भावों के जिस पोषण को पाकर हमारे जीवन में आशाओं के फूल खिलते हैं, वह खाद-पानी हमारे मन में ही मौजूद है। इसके लिए हर हाल में आनंदित रहने का प्रयास जरूरी है। आज भी भागमभाग भरी जिंदगी में यह सुखद सोच जीवन के हर दिन को वसंत बना देती है।

रंग और सुगंध का यह मौसम यही कहता है कि जीवन को सार्थक ढंग से जीने के लिए हमें अपने मन को सहज रखना होगा। मुस्कुराहटों से नाता जोड़ना होगा। खुशियां जताना और जुड़ाव के साथ जीना सीखना होगा। इस सुहावनी रुत में मुस्कुराती इठलाती धरा से यह सीखना हमारे मन का समझने का मार्ग प्रशस्त करने वाला है। जिससे या भाव गहरा होगा कि जीवन सुंदर है। इसे हम उत्सवीय रूप में देखें और जिएं। प्रकृति के इस नवपल्लव, नवगंध के साकार विलक्षण सौंदर्य से प्रेरणा लेकर जीवन में उमंग के रंग भरने का जतन करें तो मन-जीवन में भी वसंत छाएगा।

शृंगार ऋतु कहा जाने वाला वसंत का मौसम जीवंत रहने की बात कहता है। उजली धूप और हरियल धरती की इस रुत में हर ओर रंग बिरंगे फूल खिले रहते हैं। प्रकृति की ये सौम्यता मन और जीवन को उत्साहित एवं उल्लासित करती है। आनंदित होकर जिन्दगी को सजाने-संवारने और व्यवस्थित करने का संदेश लिए है। इस मौसम का प्रतीक केसरिया रंग विजय और उल्लास का रंग है। यह हंसने-खिलखिलाने और अपनी कमजोरियों से पार पाते हुए, जीवन के हर पहलू में खूबसूरती देखने की बात करता है। मन की उमंगों को खुलकर जीने की बयार वाला यह मौसम कहता है कि जिन्दगी का हर पल सुंदर है। इसमें सकारात्मक पहलुओं को तलाशें और खुशी के चटक रंगों से अपनी झोली भर लें। अपना नजरिया ही कुछ ऐसा होना चाहिए कि जैसे वासंतिक हवा सुगंध लिए होती है। हमारे विचार भी सुवासित हों। मौसम बदलने से मन के विचार भी बदलते हैं। जैसे सजी सुंदर धरा के कण-कण में सुंदरता दिखती है वैसे ही हम जीवन में हर मौके पर सौंदर्य तलाशें। विचारों में आया यह नूर हमारा नजरिया ही बदल देता है। हालांकि इस मनोहारी मौसम में प्रकृति ही नहीं आमजन का मन भी खिला-खिला हो जाता है, लेकिन भागदौड़ भरी जिंदगी में हम वसंत से मिल ही नहीं पाते। शहरों की ऊंची इमारतों और थका देने वाली जीवनशैली में, साल में एक बार आने वाला प्रकृति का यह खूबसूरत पड़ाव हम ना ठहरकर देख पाते हैं और ना ही जी पाते हैं। ऐसे में कोशिश हो कि अपना वसंत तलाशें। प्रकृति से जुड़े। गुनगुनी धूप का आनंद लें। चटक रंग के फूलों की मुस्कुराहटें देखें। पेड़ों पर फूटती नई कोपलों में जीवन की उम्मीदों की पदचाप सुनें। अपने हिस्से के वसंत से यूं जुड़ना सालभर के लिए उल्लास और ऊर्जा से आपकी झोली भर देगा। कुदरत के ये रंग आपके मन को नया इन्द्रधनुष रचने की उमंग देंगे।

प्रकृति को जीवंत और शृंगारित करने वाला यह मौसम वाकई विशेष है। वसंत में सूर्य उत्तरायण होता है। यही वजह है कि यह मौसम सकारात्मक भाव, ऊर्जा, उम्मीद और भरोसे को और प्रखर उजास देने वाला होता है। भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है कि 'ऋतुनां कुसुमाकरः' यानि ऋतुओं में मैं वसंत हूं। हमारे यहां मधुरितु, ऋतुराज, मधुमास के नाम से भी इस मौसम को जाना जाता है। वसंत को ऋतुओं को राजा भी कहते हैं क्योंकि इस मौसम में किसान फसलें घर लाता है। कई उत्सव, मेले और त्योहार दस्तक देते हैं। खिले फूलों और सुगन्धित सुहाने परिवेश में मांगलिक कार्य होते हैं। मन जीवन को स्नेह से सिंचित करने वाली इस ऋतु में प्रकृति का निखार चरम पर होता है।